09. दादी जी के महावाक्य

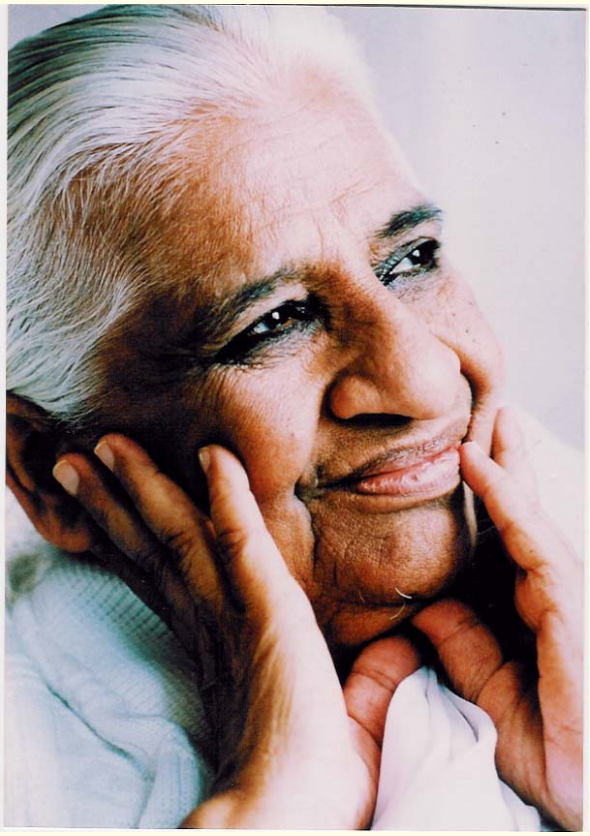

इतना बड़ा यज्ञ है, कॉन्फ्रेन्स होतीं, सेवायें होतीं; लोग पूछते दादी आपको कोई टेंशन होता है? मैं कहती हूँः नहीं,कोई टेंशन नहीं होता। नो टेंशन, नो वरी। एवर हेपी, एवर पीसफुल।

बाबा ने इतनी बड़ी बुद्धि दी, इतना बड़ा परिवार दिया, इतनी बड़ी युनिवर्सिटी दी, इतना बड़ा विश्व दिया है, इतना सारी सृष्टि का खेल देखते। अब किसी बात की वरी करूँ? किस बात का टेंशन करूँ? किस का टेंशन करूँ?

चलो कोई चीज़ रखी है, टूट गई; अब टूट गयी तो टूट गयी, टेंशन क्यों करें? किसी का हार्ट फेल हो गया तो हो गया; मैं क्यों टेंशन करूँ? किसी का एक्सीडेंट हो गया तो किसी ने जानबूझ कर तो नहीं किया है ना! उसका टेंशन क्यों करें?

कोई छोटा–मोटा नुकसान करेंगे तो कई इतना गुस्सा करेंगे जैसे गुस्सा करने से नुकसान पूरा हो जायेगा। उस वृत्ति से, न आँख से देखना है, न मुख से बोलना है, न कर्म में आना है तो सदैव बहुत अच्छे उड़ते रहेंगे। बाबा ज्ञान–योग के पंख देकर हमें उड़ाते हैं।

यह ज्ञान और योग हमें सभी बातों का प्रैक्टिकल अर्थ सिखाता है। इसीलिए हम कहेंगे कि सदैव समझो हम गॉडली स्टूडेंट हैं, हमें सीखना ही है। न हम बड़े हैं, न कोई बड़ा है। बड़े से बड़ा तो बस बाबा है। हम सब उनके स्टूडेंट हैं।

बाबा गुणों का भंडार है, देवतायें सर्वगुण संपन्न हैं। हमें बाप समान बनना है तो हमें इतने गुण धारण करने हैं। सभ्यता से चलना, यह भी बहुत बड़ा गुण है। सभ्यता वाले मधुर बोलेंगे, धीरे चलेंगे। काम करेंगे तो बहुत प्यार से, देखेंगे तो भी सम्मान से। सभ्यता लव सिखाती, रिस्पेक्ट देना सिखाती, मधुरता सिखाती है। हर बात में सभ्यता की दरकार है। यह है श्रेष्ठ मेनर्स हैं। सभ्यता वाले के पास इगो नहीं आता।

अच्छा, ओम् शांति।